फील्ड गाइड

THE MENTORING PROJECT

परमेश्वर के तरीके से सेवानिवृत्त होना: वेतन से आगे का उद्देश्य

AUTHOR: DR. RICHARD PERHAI
EDITOR: DR. LARRY OATS

परमेश्वर के तरीके से सेवानिवृत्त होना: वेतन से आगे का उद्देश्य

AUTHOR: DR. RICHARD PERHAI

EDITOR: DR. LARRY OATS

(लेखक: डॉ. रिचर्ड परहाई सम्पादक: डॉ. लैरी ओट्स)

विषय-वस्तु

परिचय: आत्मा को एक नया काम सौंपा जाना....4

भाग I: विश्राम और परिश्रम सम्बन्धी ईश-विज्ञान....6

भाग II: सुनहरे वर्षों की मूर्तियाँ....8

भाग III: बुद्धि की शब्दावली....11

भाग IV: मालिक की सम्पत्ति का प्रबन्धन करना....14

भाग V: दौड़ को अच्छे से पूरा करना....18

निष्कर्ष: सबसे अच्छा आना तो अभी बाकी है....21

परिचय: आत्मा को एक नया काम सौंपा जाना

रसोई में भूत: जब वेतन मिलना बन्द हो जाता है

बिल चालीस वर्षों तक बीमा करने वाले प्रतिनिधि रहे। उनके पास एक सोने की घड़ी थी, एक साफ-सुथरी मेज थी, और हर प्रश्न का उत्तर देने वाले व्यक्ति के रूप में उनकी प्रतिष्ठा थी। उनकी सेवानिवृत्ति के बाद वाले सोमवार को हम कॉफी पीने के लिए मिले। उन्होंने टाई पहनी हुई थी, परन्तु वे ऐसे लग रहे थे, जैसे किसी के अन्तिम संस्कार में आए हों। वे बार-बार अपनी घड़ी देख रहे थे और उस अटैची को ढूँढ़ रहे थे, जो अब वहाँ नहीं थी। उन्होंने कहा, "पास्टर जी, मुझे समझ नहीं आ रहा कि क्या करूँ। मुझे ऐसा लग रहा है कि जैसे किसी ने मुझे चलती गाड़ी से बाहर फेंक दिया हो।"

यही जीवन की वास्तविकता है। सेवानिवृत्ति कोई लम्बी छुट्टी नहीं है। यह एक खाई है। आप एक ऐसे व्यक्ति से, जिसके पास हर प्रश्न का उत्तर होता था, ऐसे व्यक्ति बन जाते हैं, जो बस अपनी ही रसोई के रास्ते में बैठा रहता है। फोन की घण्टी बजनी बन्द हो जाती है, और आप स्वयं को भूत होने जैसा महसूस करने लगते हैं। यह संसार आपसे कहता है कि यही समाप्ति रेखा है—अर्थात् अपना धन बचाओ, गोल्फ खेलो, और मरने का प्रतीक्षा करो। यह एक खतरनाक झूठ है। बिना काम वाला जीवन आत्मा को सड़ा देता है। इतने सारे सेवानिवृत्त हुए लोगों को अचानक बेकार होने का अन्दरूनी एहसास क्यों होता है? इसका एक कारण यह है कि हमने बिना किसी सार्थक काम के अवसर वाले सेवानिवृत्ति के उस झूठ को सच मान लिया है। इसका एक और बड़ा कारण यह है कि हमने अपनी नौकरी के ओहदे के साथ अपनी पहचान को उलझा लिया है। यदि आपकी पहचान आपके वेतन और नौकरी के ओहदे पर निर्भर करती है, तो सेवानिवृत्ति आपको मृत्युदण्ड जैसी लगेगी।

मार्था वाला कारक: बिना वेतन वाला भण्डारीपन

बाइबल में सेवानिवृत्ति के लिए एक भी शब्द नहीं है। इसमें भण्डारीपन के लिए एक शब्द है। भण्डारीपन एक महत्वपूर्ण अवधारणा है। इसका अर्थ यह है कि आप ऐसी धन-सम्पत्ति की देखभाल कर रहे हैं, जो आपकी है ही नहीं। चालीस वर्षों तक, आपका समय आपके मालिक का था। अब ऐसा लगता है कि यह आपके हाथों में वापस आ गया है। परन्तु यह अभी भी परमेश्वर का है। सेवानिवृत्ति बस एक नया काम सौंपे जाने जैसा है। बुढ़ापे में भण्डारीपन सम्बन्धी बाइबल आधारित

परिभाषा क्या है? यह इस बात को पहचानना है कि भले ही हमारी शारीरिक शक्ति कम हो जाए, परन्तु परमेश्वर की महिमा के लिए उसके दिए हुए वरदानों का उपयोग करने की हमारी जिम्मेदारी लगातार बनी रहती है।

मैं मार्था नाम की एक स्त्री को जानता था। उनकी आयु 85 वर्ष की थी और वह एक छोटी सी जगह पर रहती थी। वह मुश्किल से चल पाती थी। मेरे जन्म लेने से पहले ही उनका पेशा समाप्त हो चुका था, परन्तु वह मेरी कलीसिया की सबसे उपयोगी जन थी। मार्था के पास एक सूची थी। वह आस-पड़ोस के हर बीमार बच्चे और हर बिगड़े हुए विवाह के बारे में जानती थी। वह दिन में चार घण्टे अपने घुटनों के बल बैठकर प्रार्थना करती थी। उनका शरीर कमजोर हो चुका था, परन्तु उनकी आत्मा चट्टान जैसी मजबूत थी। उनमें किसी भी ऐसे मुख्य कार्यपालक अधिकारी से अधिक साहस था, जिनसे मैं कभी मिला हूँ। वह बस अपने मरने की प्रतीक्षा नहीं कर रही थी। वह राजा के लिए काम कर रही थी। इस दृश्य को देखकर, क्या आप यह निष्कर्ष निकाल सकते हैं कि एक "प्रबन्धक" (अर्थात् एक भण्डारी) होने का क्या यह अर्थ है कि आप अपनी सेवानिवृत्ति का आनन्द नहीं उठा सकते? निश्चित रूप से ऐसा नहीं है। एक अच्छा प्रबन्धक मालिक के संसाधनों का उपयोग मालिक के उद्देश्यों के लिए करता है, जिसमें प्रबन्धक की देखभाल और आनन्द भी शामिल है, केवल इतना हो कि हमारी आशा अपने आराम पर नहीं, बल्कि उस पर लगी हो।

वह पहाड़ी मुझे दे: कालेब जैसी सोच

हमें कालेब के बारे में बात करनी चाहिए। उसने 85 वर्ष की आयु में यहोशू से कहा, "वह पहाड़ी मुझे दे" (यहोशू 14:12)। वह कोई घर या एक झपकी नहीं ढूँढ़ रहा था। वह और काम करना चाहता था, क्योंकि उसे पता था कि उसके पास तलवार एक कारण से थी। मुझे कैसे पता चलेगा कि मैंने आराम को ही अपना ईश्वर बना लिया है या नहीं? इसके आम लक्षणों में लगातार बोरियत महसूस होना, ऐसा हृदय जो उन बातों पर गुस्सा होता है, जिन्हें आप बदल नहीं सकते, और हर दिन को स्थायी शनिवार जैसा समझना शामिल है। यदि आपकी शान्ति आपके सेवानिवृत्ति वाले बैंक खाते पर या आपके गोल्फ खेलने की क्षमता पर निर्भर करती है, तो आपने खेल के मैदान को प्रभु की जगह दे दी है।

हम धन के बारे में बात करेंगे। दोपहर 2 बजे के अकेलेपन में, जब आपको अपने बच्चों से सहायता माँगनी पड़ती है, तो आपके घमण्ड को जो चोट पहुँचती है, वह एक कड़वी गोली की तरह होती है। परन्तु आपका काम अभी समाप्त नहीं हुआ है। आप बस उस हिस्से तक पहुँच रहे हैं, जो महत्व रखता है। यह कोई बाजारीकरण या खोखला प्रोत्साहन नहीं है, बस सच है। हमें यह देखना होगा कि हम काम क्यों करते हैं और हम विश्राम क्यों करते हैं। हम तब तक आगे नहीं बढ़ सकते, जब तक कि हम अपने समय पर रखे हुए काल्पनिक स्वामित्व का बोझ उतार नहीं देते। बिल की खाली अटैची एक ऐसी मूर्ति थी, जो प्रकाश को रोक रही थी। स्वतंत्रता पाने के लिए, हमें अपने बनाए हुए गोल्फ के मैदान को छोड़कर परमेश्वर के अधिकार की खुली हवा में कदम रखना होगा।

हमारे सामने असल जीवन की मुश्किलों और परेशानियों के बारे में बातचीत रखी हुई है। यह मार्ग टूटे हुए घमण्ड की पीड़ा से गुजरते हुए उस शान्ति की ओर ले जाता है जो बाजार पर निर्भर नहीं करती। हम बुनियाद रखने से आरम्भ करते हैं। हमें एक बार और हमेशा के लिए यह तय करना होगा कि असल में इस घर का मालिक कौन है।

1

विश्राम और परिश्रम सम्बन्धी ईश-विज्ञान

सब्त का दिन और आत्मा: हमेशा की छुट्टी का मिथक

हमें यह बात समझाई गई है, जो पेशे के अन्त को बुलाहट के अन्त के बराबर बताती है। हमारी संस्कृति सेवानिवृत्ति को "हमेशा की छुट्टी" या कभी न समाप्त होने वाले शनिवार की तरह मानती है, जिसमें अगली आरामदायक कुर्सी ढूँढ़ना ही एकमात्र जिम्मेदारी होती है। परन्तु यह एक ऐसा झूठ है, जो आत्मा को मार देता है। उत्पत्ति 2 अध्याय में, हम देखते हैं कि परमेश्वर ने सातवें दिन विश्राम तो किया, परन्तु उसने काम करना नहीं छोड़ा। उसका विश्राम अपने अधिकार से सेवानिवृत्त होना नहीं, बल्कि एक काम के अच्छे से पूरा होने की सन्तुष्टि, और अपनी रचना की सुन्दरता का आनन्द लेने के लिए एक ठहराव था।

जब हम अपनी सेवानिवृत्ति को कभी न समाप्त होने वाली छुट्टी में बदलने का प्रयास करते हैं, तो हमें पता चलता है कि हमारी आत्मा सड़ने लगी है। क्या बाइबल कभी यह सुझाव देती है कि मनुष्य एक ऐसी आयु में पहुँच जाता है, जब उसका कोई उद्देश्य नहीं रह जाता? इसका उत्तर एक गूँजता हुआ "नहीं" है। बाइबल-आधारित समझ से, विश्राम का अर्थ वास्तविकता से दूर हो जाना नहीं, बल्कि आराधना और सेवा के लिए स्वयं को फिर से ऊर्जा से भर लेना होता है। यदि आप अपने जीवन के अन्तिम दशकों को राज्य के काम से धीरे-धीरे अलग होने का समय मानते हैं, तो आप उस लय का इन्कार कर रहे हैं, जिसका परमेश्वर ने इस जगत में निर्माण किया है। बिना किसी उद्देश्य की चुनौती वाला जीवन शान्ति वाला नहीं, बल्कि गतिहीनता वाला होता है। हमें सब्त के दिन के विश्राम से वापस वाटिका में काम करने के चक्र में जीवन बिताने और आगे बढ़ने के लिए बनाया गया था। हमारी साँझ के समय में भी, उस वाटिका को अभी भी जुताई की आवश्यकता है, भले ही औजार बदल गए हों।

वाटिका में काँटे: कमजोर होते शरीर की निराशा

इस बारे में झूठ बोलना बेकार है कि: बुढ़ापा पतन की एक कठोर याद है। उत्पत्ति 3 अध्याय में बताए गए "काँटों और ऊँटकटारों" को हम अपने जोड़ों में, अपनी यादों में और अपने फेफड़ों में महसूस करते हैं। यह एक हार जाने वाली लड़ाई है। आपका मस्तिष्क सुबह 7:00 बजे कोई योजना बनाता है, परन्तु आपके शरीर को दोपहर तक इसकी खबर ही नहीं होती। यह मानवीय दशा की अन्दरूनी पीड़ा है। हम ऐसी अनन्त आत्माएँ होने के तनाव में जीवन बिता रहे हैं, जो नष्ट होते डेरों में फँसी हुई हैं।

परमेश्वर शरीर को कमजोर क्यों होने देता है, जबकि आत्मा और अधिक के लिए अक्सर उत्सुक रहती है? यही निराशा एक तरह की कठोर दया है। इसे इस तरह बनाया गया है कि यह हमारा स्वयं-पर-भरोसा-करना दूर कर दे और हमें एक बेहतर

देश की ओर देखने के लिए विवश करे। और उस व्यक्ति की ओर हमारी अगुवाई करे, जिसके पास हमें वहाँ ले जाने की सामर्थ्य है। शरीर का सड़ना हमारे घमण्ड पर सबसे बड़ा प्रहार है। यह हमें याद दिलाता है कि हम कभी भी अपनी सामर्थ्य के "मालिक" नहीं थे। हम तो बस उधार में मिली हुई जीवन-शक्ति के प्रबन्धक थे। जब रास्ता ऊबड़-खाबड़ लगे और चलना लम्बा लगने लगे, तो यह वचन पर और अधिक भरोसा करने की ओर आत्मा के साथ कदम मिलाकर चलने की बुलाहट है। हमें याद दिलाया जाता है कि हमारी कीमत कभी भी हमारे शारीरिक कामों में नहीं थी, बल्कि हममें पाए जाने वाले परमेश्वर के स्वरूप में थी। शरीर के कमजोर होने का अर्थ यह नहीं है कि काम समाप्त हो गया है, परन्तु इसका अर्थ यह है कि काम अब और अधिक आत्मिक, और अधिक केन्द्रित तथा प्रभु के अनुग्रह पर और अधिक निर्भर हो रहा है।

अनन्त मजदूर: अन्तिम श्वास तक उस स्वरूप को बनाए रखना

हम उस परमेश्वर की सेवा करते हैं, जो हमेशा काम करता रहता है। यूहन्ना 5:17 में यीशु ने कहा, "मेरा पिता अब तक काम करता है, और मैं भी काम करता हूँ।" क्योंकि हम उसके स्वरूप को धारण करते हैं, इसलिए हमें अपनी अन्तिम श्वास तक किसी उद्देश्य के लिए बनाया गया है। यह सोचना ईश-वैज्ञानिक रूप से असम्भव है कि हम बस उपयोगी बने रहने की अपनी अभिलाषा को "बन्द" कर सकते हैं। हम योगदान देने के लिए ही बने हैं। बाइबल असल में सेवानिवृत्ति के बारे में क्या कहती है? जबकि पुराने नियम में लेवी लोग पचास वर्ष की आयु में भारी शारीरिक श्रम से हट जाते थे (गिनती 8:25-26), परन्तु वे घर जाकर झपकी नहीं लेते थे। वे मार्गदर्शन करने, सिखाने और जवान पीढ़ी की सहायता करने की भूमिकाओं में चले जाते थे।

उन्हें सेवानिवृत्त नहीं किया जाता था, बल्कि नया काम सौंपा जाता था। हो सकता है कि इस दौर में आपके "काम" में कहीं आना-जाना या कोई कागजी कार्रवाई शामिल न हो, परन्तु इसमें दूसरों के लिए प्रार्थना करने की बड़ी बुलाहट, अपने बाद आने वालों को मार्गदर्शन देने का संकल्प और उथल-पुथल से भरे इस संसार में एक स्थिर उपस्थिति बने रहने की समझ शामिल है। आप एक लम्बे समय वाले काम पर रखे गए राजदूत हैं। प्रभु अपने भण्डारियों को सेवानिवृत्त नहीं करता। वह उन्हें निखारता है। वह उन कौशलों को ले लेता है, जिन्हें निखारने के लिए आपने बाजार में चालीस वर्ष खर्च किए हैं और उन्हें आत्माओं की कटनी के लिए नये सिरे से उपयोग करता है। यदि आप अभी भी श्वास ले रहे हैं, तो मालिक के पास उसकी धन-सम्पत्ति में आपके लिए अभी भी काम है। अटैची शायद खाली हो, परन्तु उसकी बुलाहट उतनी ही भरी हुई है, जितनी वह हमेशा से रही है।

2

सुनहरे वर्षों की मूर्तियाँ

"पर्याप्त" की मृगतृष्णा: तिजोरी की चिन्ता

हम ऐसे लोग हैं, जो स्थिर बने रहने से इन्कार करने वाली एक संख्या से डरे रहते हैं। हमने सोने की एक विशेष माला के पीछे भागते हुए यह सोचकर चालीस वर्ष बिता दिए कि एक बार जब हम उस लक्ष्य तक पहुँच जाएँगे, तो अन्त में बेचैन हृदय की धड़कनें शान्त हो जाएँगी। हमने सोचा था कि तिजोरी से हमें नींद मिल जाएगी। परन्तु असल में, सेवानिवृत्ति का धन कभी भी चिन्ता को शान्त करने के लिए पर्याप्त बड़ा नहीं लगता। कमाना बन्द होने के बाद अक्सर आर्थिक डर क्यों बढ़ जाता है, जबकि बैंक खाते में धन भरा होता है? ऐसा इसलिए होता है, क्योंकि हमने अपनी आशा प्रदाता से हटाकर प्रावधान पर लगा दी है। यद्यपि पर्याप्त बचत कभी-कभी चिन्ता के ठीक उलट एहसास कराती है, परन्तु इसकी जड़ वही होती है। लूका 12 अध्याय के उस धनवान मूर्ख को याद करें, जिसने अपनी भरी हुई बखारियों को देखकर अपने प्राण से चैन करने को कहा? उसे लगा कि उसके पास "पर्याप्त" है, परन्तु वह यह भूल गया था कि उसके जीवन के अगले पंद्रह मिनटों पर भी उसका कोई अधिकार नहीं था। दोनों ही मामलों में, लोग सुरक्षा के लिए धन पर भरोसा करते हैं।

सेवानिवृत्ति के समय होने वाली चिन्ता एक ईश-वैज्ञानिक चेतावनी की घण्टी है। यह उस हृदय की अन्दरूनी पुकार है, जिसे एहसास हुआ है कि उसका गढ़ तो कागज का बना है। महंगाई, बाजार की गिरावट और कमजोर होते शरीर की देखभाल का बढ़ता खर्च ऐसे "काँटे" हैं, जो हमारे अंकों वाले बही-खाते को चुभते हैं। यदि आपकी शान्ति किसी कागज पर निर्भर करती है, तो आप समाचार की हर बड़ी खबर के दास बन जाएँगे। भण्डारीपन का अर्थ यह समझना है कि आपके सेवानिवृत्ति वाले बैंक खाते में रखा धन, असल में मालिक की बखारी में जमा उसी का अनाज है। आप ईश्वर नहीं, वरन् प्रबन्धक हैं। आप अपनी बचत से हृदय की एक भी अतिरिक्त धड़कन नहीं खरीद सकते। जब हम अपने भविष्य के मालिक बनने का प्रयास करना छोड़ देते हैं, तो "पर्याप्त की मृगतृष्णा" ओझल हो जाती है, और अन्त में हम उस व्यक्ति के प्रावधान में विश्राम पा सकते हैं, जो गौरैयों को भी खिलाता है।

आराम की मूर्ति: "अच्छे जीवन" का खोखला वादा

आराम एक बुरा देवता है। यह पृथ्वी पर स्वर्ग का वादा तो करता है, परन्तु बदले में केवल खालीपन देता है। हमें "सुनहरे वर्षों" को स्थायी शनिवार की तरह देखने का प्रशिक्षण दिया गया है—जो कि गोल्फ खेलने, यात्रा करने और जलवायु-नियंत्रित आराम की विधि है। हम इसे "अच्छा जीवन" कहते हैं, परन्तु जब यह हमारे अस्तित्व का मुख्य लक्ष्य बन जाए, तो यह एक मूर्ति बन जाता है। मुझे कैसे पता चलेगा कि मैंने अपनी सेवानिवृत्ति को आराम की मूर्ति बना लिया है या नहीं? आप इसे बोरियत से बता सकते हैं। आप इसे उस तरीके से भी बता सकते हैं, जब यात्रा की योजना बिगड़ने पर या स्थानीय

कलीसिया के द्वारा आपका समय माँगे जाने पर आपको गुस्सा आता है। यदि आपका जीवन पूरी तरह से आपके अपने आराम पर केन्द्रित है, तो आप भण्डारी नहीं रहे और मालिक की धन-सम्पत्ति पर कब्जा करने वाले की तरह व्यवहार करने लगे हैं।

केवल अपने मनोरंजन के लिए समर्पित जीवन अन्त में बर्बाद हो जाता है। आत्मा को उद्देश्य की चुनौती और राज्य के "काम" के लिए बनाया गया था। जब हम आराम को अपना ईश्वर बना लेते हैं, तो हम देखते हैं कि गोल्फ का मैदान आखिरकार रेगिस्तान जैसा लगने लगता है और बड़ा समुद्री जहाज बन्दीगृह जैसा लगने लगता है। हम इसलिए बोर हो जाते हैं, क्योंकि हमें केवल उपभोग करने से कहीं अधिक के लिए बनाया गया था। 1 तीमु. 6:17 हमें बताता है कि परमेश्वर हमारे सुख के लिए वस्तुएँ देता है, परन्तु जिस पल वह सुख ही मालिक बन जाए, तो भण्डारी भी दास बन जाता है। सेवानिवृत्ति का असली आनन्द काम न होने में नहीं, बल्कि उस नये काम को सौंपे जाने में मिलता है, जो अब भी वास्तव में महत्व रखता है—और वह ऐसा काम है, जो हमारे अपने अहंकार पर समाप्त नहीं होता।

अप्रासंगिक होने का डर: खाली कुर्सी की खाई

जब फोन बजना आखिरकार बन्द हो जाता है, तो एक बहुत ही विशेष और भीतर तक होने वाली पीड़ा महसूस होने लगती है। दशकों तक, आवश्यक होने के शोर से आपका जीवन परिभाषित होता था। आप ही तो थे, जिनके पास सारे उत्तर होते थे, और जो संकटों को सम्भालते थे, और जिसके हस्ताक्षर में वजन होता था। आपके दरवाजे पर आपकी उपाधि लगी हुई थी, कोने वाला कार्यालय आपका था, और आपके पास लम्बे पेशे के साथ मिलने वाला शान्त प्रभाव था। परन्तु फिर वह पहला सोमवार आता है, जब सोने की घड़ी दराज में रख दी जाती है, और घर की खामोशी कानों को बहरा कर देने वाली बन जाती है। आपको एक जोरदार झटके के साथ यह एहसास होता है कि संसार तो आपके बिना ही आगे बढ़ रहा है। अभी भी बैठकें हो रही हैं, अभी भी निर्णय लिए जा रहे हैं, और अभी भी उद्योग में मंथन चल रहा है—परन्तु अब आप उस कमरे में नहीं हैं।

यही अप्रासंगिकता की खाई है। यह "चरागाह से हटाए जाने" की डरावनी संवेदना है, और यदि हम सच कहें, तो उस पल में महसूस होने वाला डर यह प्रकट करता है कि हमने असल में अपने महत्व की मूर्ति की कितनी उपासना की है। हम अपने उद्योगों में, यहाँ तक कि अपने परिवारों के साथ चारदीवारी के बीच में भी भूत की तरह इसलिए महसूस करते हैं, क्योंकि हमने अपना पूरा जीवन अपनी बुनियादी कीमत को आवश्यक होने की उपयोगिता से जोड़ने के प्रयास में खर्च कर दिया है। हमने स्वयं को भरोसा दिलाया था कि हमारी "जिम्मेदारी उठाने" की क्षमता में ही हमारी कीमत है—कि जब तक लोग हम पर निर्भर हैं, हम सुरक्षित हैं। परन्तु जब वह जिम्मेदारी जवान कंधों पर चली जाती है, तो हम परछाई में खड़े रह जाते हैं, और हैरान होते हैं कि जब प्रबन्ध करने के लिए कोई व्यक्ति नहीं बचा, तो फिर हम कौन हैं।

जब कोई मसीही प्रभारी नहीं रहता, तो उसे अपने घमण्ड को लगी मानसिक और आत्मिक चोट से कैसे निपटना चाहिए? इस खाई से निकलने का रास्ता विनम्रता का पुराना और संकरा मार्ग है। शायद अपने वयस्क जीवन में पहली बार, आपको यह एहसास हो कि आपकी कीमत असल में आपकी नौकरी की उपाधि, आपके पेशेवर पद, या आपके वार्षिक परिणामों में कभी नहीं थी। वे बातें तो बस एक अस्थायी काम का हिस्सा थीं। आपकी असली कीमत परमेश्वर की सन्तान के रूप में

आपकी हैसियत से जुड़ी हुई है, और यह हमेशा से ही उससे जुड़ी हुई थी—और यह एक ऐसा दर्जा है, जिसे कोई भी सेवानिवृत्ति परिषद् कभी छीन नहीं सकता। अप्रासंगिक हो जाने का डर असल में अहंकार की "मृत्यु के समय आने वाली हिचकी" है। यह आपके पेशेवर घमण्ड के छिन जाने की आवाज है, ताकि आप अन्त में यह देख सकें कि सचमुच केवल परमेश्वर ही सबसे अधिक महत्वपूर्ण है।

इस संसार की दृष्टि में "अप्रासंगिक" होना अक्सर राजा की दृष्टि में सचमुच उपयोगी बनने की एक दिव्य शर्त होती है। जब आपके पास बचाने के लिए कोई उपाधि या बनाए रखने के लिए कोई प्रतिष्ठा नहीं रह जाती, तो आप आखिरकार उन परछाइयों में सेवा करने के लिए स्वतंत्र हो जाते हैं, जहाँ राज्य का असली काम लगातार चलता रहता है। यह परिषद् कक्ष से बरतन तक का बदलाव है। अब आप ऐसे व्यक्ति बनने के लिए स्वतंत्र हैं, जो गुप्त में प्रार्थना करता है, जो बिना कोई श्रेय पाने की आवश्यकता के मार्गदर्शन करता है, और भीड़ की तालियाँ चाहे बिना ही टूटे हुए लोगों के पाँव धोता है। कार्यालय की खाली कुर्सी किसी समाप्त हो चुके जीवन की त्रासदी नहीं है। यह एक अलग तरह की मेज के लिए औपचारिक निमंत्रण है, जहाँ बैठने की सूची सामूहिक पदानुक्रम के बजाय अनुग्रह से व्यवस्थित होती है। इस नये दौर में, आपके "महत्व" की कमी ही आपकी सबसे बड़ी सामर्थ्य बन जाती है, जिससे आप स्वयं पर से ध्यान हटवाकर, पूरी तरह से उस प्रभु की ओर ध्यान लगवा पाते हैं, जिसकी आपने हमेशा सेवा की है।

3

बुद्धि की शब्दावली

प्राचीन का कर्तव्य: महिमा का मुकुट और मार्गदर्शन करने की बुलाहट

हमारी संस्कृति में, पके बालों को एक शारीरिक कमी माना जाता है, जिसे रंग लगाया, छिपाया या अनदेखा किया जाता है। हम आयु बढ़ने को एक कमजोर जीवन की ओर धीरे-धीरे पीछे हटने के रूप में देखते हैं। बाहरी मनुष्य कमजोर होता जा रहा है। परन्तु बाइबल समय बीतने को आत्मिक पूँजी के जमा होने के रूप में देखती है। नीति. 16:31 हमें बताता है कि जब पके बाल धार्मिकता के रास्ते पर मिलते हैं, तो वे "शोभायमान मुकुट" ठहरते हैं। यह केवल प्राचीनों के लिए बड़ाई नहीं है; यह काम का विवरण है। "मुकुट" आराम के सिंहासन पर बैठने के लिए नहीं है। यह नेतृत्व करने के साहस और प्राचीन के कर्तव्य के लिए है।

इस कर्तव्य का तरीका हमें तीतुस 2 अध्याय में मिलता है। पौलुस बूढ़े पुरुषों और बूढ़ी स्त्रियों से कोई शौक पाल लेने और रास्ते से हट जाने के लिए नहीं कहता। वह उनसे कहता है कि वे "सचेत और गम्भीर और संयमी हों" और "जवान पीढ़ी को समझाएँ"। कलीसिया को—और इस संसार को—उन लोगों का मार्गदर्शन करने की इतनी सख्त आवश्यकता क्यों है, जिन्होंने अपना पेशा पूरा कर लिया है? ऐसा इसलिए है, क्योंकि बुद्धिमानी को डाउनलोड नहीं किया जा सकता। इसे जीया जाना चाहिए। इसे वैसे ही आगे बढ़ाया जाना चाहिए, जैसे लोहा लोहे को चमकाता है। जवान पीढ़ी जानकारी में तो डूबी हुई है, परन्तु दृष्टिकोण के लिए तरस रही है। उनके पास ऊर्जा तो है, परन्तु आपके पास निशान हैं। आपने बाजारों को गिरते देखा है, आपने विवाहों को "काँटों" से उबरते हुए देखा है, और आपने चालीस वर्षों तक सोमवार के दिन परमेश्वर को भरोसेमन्द बने रहते हुए देखा है। इस दौर में भण्डारीपन का अर्थ यह समझना है कि आपका अनुभव आपकी निजी सम्पत्ति नहीं है। यह प्रभु की ओर से कर्जे पर मिला एक संसाधन है, जिसे अगली पीढ़ी में डालना है। यदि आप अपनी बुद्धिमानी को बिना किसी को सौंपे अपने साथ ही कब्र में ले जाते हैं, तो आपने प्रभु के सबसे कीमती निवेश को बर्बाद कर दिया है।

प्रार्थना की विरासत: एक छोटे से कमरे की संसार भर में पहुँच

एक बार-बार दोहराया जाने वाला मिथक है कि हमारी उपयोगिता हमारे चलने-फिरने से जुड़ी हुई है। हमें लगता है कि यदि हम काम नहीं "कर" सकते—अर्थात् यदि हम यात्रा नहीं कर सकते, कुछ बना नहीं सकते या बैठकों की अगुवाई नहीं कर सकते—तो हमारा काम समाप्त हो गया। यह आत्मिक अर्थव्यवस्था की गलतफहमी है। मैं एक स्त्री को जानता था, जिनका भौतिक संसार अन्त में एक निजी चिकित्सालय के एक कमरे की चारदीवारी तक ही सिमट गया था। उनका शरीर गठिया और बुढ़ापे के कारण से कमजोर हो गया था। संसार के लिए, वह बस अन्त की प्रतीक्षा कर रहे एक "भूत" के जैसी थी। परन्तु राज्य में, वह बहुत बड़ी खिलाड़ी थी।

उनके पास एक नक्शा और एक नोटबुक थी। वह अपने दिन दूसरों के लिए प्रार्थना करने के कठिन और अदृश्य परिश्रम में बिताती थी। वह अपने बिस्तर के पास से ही पूरे संसार के लिए, अफ्रीका के दूर-दराज वाले इलाकों में मिशनरियों के लिए और शहर के कंक्रीट वाले जंगलों के जवान पास्टरों के लिए प्रार्थना करती थी। क्या सच में कोई सेवानिवृत्त व्यक्ति शारीरिक कमजोरी की दशा में संसार पर प्रभाव डाल सकता है? ऐसा बिलकुल हो सकता है। असल में, उनकी कमजोरी ही उनकी सबसे बड़ी सम्पत्ति थी। उनके पास व्यस्त कार्यक्रम या अपनी सामर्थ्य के भ्रम का कोई भटकाव नहीं था। उनमें उस स्त्री का साहस था, जो जानती थी कि "धर्मी जन की प्रार्थना के प्रभाव से बहुत कुछ हो सकता है" (याकूब 5:16)। उनकी विरासत किसी ऐसी इमारत में नहीं थी, जिस पर उनका नाम लिखा हो। उनकी विरासत उन लोगों के जीवनों में थी जिनसे वह कभी नहीं मिली थी, और जिन्हें उनके उस आत्मिक काम से सहारा मिला था, जो उन्होंने तब किया, जब संसार को लगता था कि उनका "काम समाप्त हो चुका है"। सेवानिवृत्ति का अर्थ लड़ाई से पीछे हटना नहीं है। यह अक्सर प्रार्थना के रणनीतिक कमान केन्द्र में जाने जैसा है। यह कोई पदावनति नहीं, बल्कि पदोन्नति है। यहाँ तक कि यीशु ने भी, जब वह जी उठकर पिता के दाहिने हाथ पर जा बैठा, दूसरों के लिए प्रार्थना करने की इस सबसे महत्वपूर्ण सेवा में प्रवेश किया।

अन्तिम अध्याय लिखना: नया काम सौंपे जाने में उद्देश्य खोजना

हम अक्सर अपने जीवन के अन्तिम अध्यायों को किसी चलचित्र के अन्त में आने वाली "आभार सूची" की तरह समझते हैं——जो ध्यान देना बन्द करके बस बाहर निकल जाने का समय होता है। परन्तु भण्डारी के लिए, अन्तिम अध्याय ही वह समय है, जब कथानक असल में सुलझता है। यही वह हिस्सा है, जो महत्व रखता है। जब सेवानिवृत्ति के बाद पुरानी उपाधियाँ समाप्त हो जाती हैं, तो एक मसीही अपना विशेष उद्देश्य कैसे ढूँढ़ सकता है? इसकी शुरुआत नया "पेशा" खोजना छोड़कर "नया काम सौंपे जाने" की खोज करना आरम्भ करने से होती है।

अपना उद्देश्य खोजने के लिए ऐसे हृदय की आवश्यकता होती है, जो छोटा बनने का इच्छुक हो। इसका अर्थ हो सकता है कि आप बिना पिता वाले किसी लड़के को कोई व्यापार सिखाने के लिए स्वयंसेवक बनें, या अपने प्रशासनिक कौशल का उपयोग करके किसी मुश्किल में फँसी गैर-लाभकारी संस्था की सहायता करें, या बस ऐसे दादा-दादी अथवा नाना-नानी बनें, जिससे कि जब संसार बच्चे का ध्यान खींचने के लिए शोर मचा रहा हो, तो आप उसके कान में सुसमाचार बोलें। यह इस संसार में साहस की बात है। आपको अपना उद्देश्य संसार की आवश्यकता और सत्तर वर्षों में जमा की गई अपनी बुद्धिमानी के चौराहे पर मिलता है। "सेवानिवृत्ति की योजना" न ढूँढ़ें; "भण्डारीपन का जनादेश" ढूँढ़ें।

प्रभु आपकी उपलब्धियों का कोई सिद्ध कागज नहीं ढूँढ़ रहा है। वह ऐसा हृदय ढूँढ़ रहा है, जो कहे, "मैं अभी भी यहाँ हूँ, और मैं अभी भी तेरा हूँ।" हो सकता है कि दूसरों के लिए प्रार्थना करने का आरम्भ आप से ही हो: "हे प्रभु, मैं सुन रहा हूँ। आज तेरी क्या आज्ञा है?" अन्तिम अध्याय इस बारे में नहीं हैं कि आप अब क्या नहीं कर सकते। परमेश्वर को पहले से उसके बारे में पता है। अन्तिम अध्याय इस बारे में हैं कि आपने जो यात्रा तय की है, उसके कारण वह क्या है, जो केवल आप ही कर सकते हैं। आप एक ऐसे जीवन की विरासत लिख रहे हैं, जिसने चरागाह से हटाए जाने से इन्कार कर दिया। आप साबित कर रहे हैं कि आत्मा सेवानिवृत्त नहीं होती——वह बस अपने स्रोत के समीप जाने की यात्रा तय करती है। इसी के साथ सेवा करने के नये तरीके खोजने का साहस भी आता है। मैं एक सेवानिवृत्त अभियन्ता को जानता था, जिन्होंने सेवानिवृत्ति के आरम्भिक वर्षों में संसार भर में कई अभियांत्रिकी मिशनरी परियोजनाओं में सेवा की। परन्तु 90 वर्ष की

आयु में भी, भले ही वे अभियांत्रिकी यात्राओं पर नहीं जाते थे, तौभी वे सेवा करने के तरीके ढूँढ़ते रहे। और वे अभी भी रविवार की सभाओं के बाद रविवार की पाठशाला की कक्षाओं की साफ-सफाई कर सकते थे।

4

मालिक की सम्पत्ति का प्रबन्धन करना

बिना वेतन वाली उदारता: पेंशन से ऊपर प्रावधान

जब हर दो सप्ताह में मिलने वाले वेतन का नियमित क्रम रुक जाता है, तो अक्सर हृदय में एक छोटा सा डर घर कर जाता है। हम "सीमित आय" और "पेंशन" को परमेश्वर की प्रावधान करने की क्षमता की सीमाओं के रूप में देखते हैं। सीमाओं के अपने डर से, हम उस हाथ को बन्द करने की परीक्षा में पड़ जाते हैं, जिसे हमने कभी खुला रखा था। हम स्वयं से कहते हैं कि हमें "जिम्मेदार बनना" होगा, जो अक्सर जमाखोरी के पुराने पाप का एक धार्मिक मुखौटा होता है। जब बैंक खाते में कोई नयी कमाई नहीं आ रही हो, तो एक सेवानिवृत्त व्यक्ति कैसे उदार बना रह सकता है? इसका उत्तर पेंशन से हटाकर प्रदाता पर अपनी दृष्टि लगाने में मिलता है।

सीमित आय का भण्डारीपन प्रावधान की सबसे बड़ी परीक्षा है। यह उस विधवा के साहस जैसा है, जिसके पास मात्र दो दमड़ियाँ थी, और वह समझती थी कि राज्य का गणित बाजार के गणित से अलग होता है। उदारता धनवानों के लिए कोई विलासिता नहीं है, बल्कि विश्वासयोग्य लोगों के लिए एक अनुशासन है। हो सकता है कि आप पहले के जैसी भुगतान वाली पर्ची लिख पाने में सक्षम न हों, परन्तु फिर भी आपको प्रभु के काम में निवेश करने के लिए बुलाया जाता है। इसके लिए गहरी समझ की आवश्यकता होती है। इसका अर्थ "आराम की मूर्तियों" के बजाय जो अक्सर सेवानिवृत्त व्यक्ति के धन के लिए कोलाहल करती हैं, स्थानीय कलीसिया और टूटे हुए लोगों की आवश्यकताओं को प्राथमिकता देना है। प्रावधान पर भरोसा करने का अर्थ यह विश्वास रखना है कि जिस परमेश्वर ने चालीस से अधिक वर्षों के परिश्रम के दौरान आपको सम्भाले रखा, वह आपको नया काम सौंपे जाने के बीस से अधिक वर्षों में भी अकेला नहीं छोड़ेगा। जब आप अपने "सीमित" संसाधनों में से देते हैं, तो आप अपनी आत्मा से यह कह रहे होते हैं कि आपकी सुरक्षा तिजोरी में नहीं, बल्कि प्रभु के वचन में है।

समय का भण्डारीपन: नयी मुद्रा को खर्च करना

इस सेवानिवृत्ति के दौर में, आपकी "मुद्रा" का मूल स्वभाव एक क्रांतिकारी परिवर्तन से होकर गुजरता है। कई दशकों तक, आप शायद लगातार समय की कमी की दशा में काम करते रहे होंगे, वेतन के लिए अपना समय बेचते रहे होंगे तथा अपने परिवार, अपने विश्वास और अपने विश्राम के लिए बस बचा-खुचा थोड़ा-सा समय ही निकाल पाते होंगे। अब, शायद आपको पता लगे कि आपकी तरल पूँजी अधिक सीमित है, परन्तु अचानक आपके पास समय का एक बहुत बड़ा भण्डार

आ गया है। यह जगत का वह संसाधन है, जिसे आप फिर कभी कमा नहीं सकते, और यही वह बात है, जिसके लिए आपके जीवन में उपस्थित हर जवान व्यक्ति वर्तमान में भूखा है।

हालाँकि, एक परीक्षा यह भी होती है कि समय की इस अचानक मिली सम्पत्ति को ऐसे समझा जाए कि मानो यह तो बेकार का कचरा है—या कुछ ऐसा है, जिसे निवेश करने के बजाय बस "समाप्त कर दिया जाए"। हम इसे हर जगह देखते हैं: सेवानिवृत्त हुए लोग पूरे दिन चलने वाले समाचारों को देखने में हज़ारों घण्टे बिताते हैं, और ऐसी बातों के विशेषज्ञ बन जाते हैं, जिन्हें वे बदल नहीं सकते, और ऐसे लोगों से गुस्सा होते हैं, जिनसे वे कभी मिलेंगे भी नहीं। हम इसे ऐसे शौक में भी देखते हैं, जो पूरी तरह से स्वयं तक ही सीमित होते हैं, और जिनका उद्देश्य बस सूरज ढलने तक समय बिताना होता है। यह आराम के "स्थायी शनिवार" का जाल है। परन्तु बाइबल के दृष्टिकोण से, समय कोई ऐसी वस्तु नहीं है, जिसके मालिक आप हैं कि आप उसे अपने लिए बर्बाद कर सकते हैं। समय प्रभु की सम्पत्ति है। आपकी यात्रा के अन्तिम पड़ाव के लिए इसे आपको सौंपा गया है। इसे ऐसी बातों पर खर्च किया जाना चाहिए, जो आपकी धड़कन के बाद भी बनी रहें। तो, आप इसे कहाँ और किस पर निवेश करेंगे?

जब 9-से-5 वाला कार्यक्रम समाप्त हो जाए, तो एक मसीही को व्यावहारिक रूप से और प्रभावशाली रूप से अपना समय कैसे निवेश करना चाहिए? इस नयी मुद्रा को खर्च करने का सबसे रणनीतिक तरीका इसे सीधे-सीधे लोगों पर निवेश करना है। आपको बाजार के दिखाई देने वाले परिश्रम से हटकर उस दिखाई न देने वाले, अत्यन्त कठिन परिश्रम की ओर बढ़ने के लिए बुलाया गया है, जिसे यह व्यस्त और भागदौड़ से भरा संसार पूरी तरह अनदेखा कर देता है। इसे ही हम उपस्थिति का भण्डारीपन कहते हैं। इसका अर्थ ऐसे दादा-दादी या नाना-नानी बनना है, जो केवल बच्चों की "निगरानी" नहीं करते, बल्कि घड़ी पर दृष्टि रखे बिना सच में उनके डर और सपनों को सुनते हैं। इसका अर्थ ऐसा मार्गदर्शक बनना है, जो किसी मुश्किल में फँसे युवा पेशेवर से कॉफी पर मिलता है और दो घण्टे तक इसलिए रुकता है, क्योंकि अब आपको किसी बैठक के लिए जल्दी नहीं जाना है। इसका अर्थ दूसरों के लिए प्रार्थना करने वाला ऐसा व्यक्ति बनना है, जो टूटे हुए विवाहों और आस-पड़ोस की भटकी हुई आत्माओं के लिए अपने घुटनों के बल बैठा रहता है, तब भी जब बाकी सब लोग अपनी सूची के अगले काम में लग चुके होते हैं।

आपको उपलब्ध रहने की सेवकाई का "एक नया काम सौंपा" गया है। राज्य की अर्थव्यवस्था में, अक्सर उपलब्ध होना, योग्य होने से अधिक महत्वपूर्ण होता है। यदि आप समय की इस बड़ी सम्पत्ति को केवल अपने मनोरंजन और आराम पर खर्च करने का चुनाव करते हैं, तो आप उस प्रबन्धक की तरह काम कर रहे हैं, जो केवल अपने पाँव गर्म रखने के लिए मालिक की नकदी को जला देता है। आप धन-सम्पत्ति बढ़ाने के बजाय पूँजी समाप्त कर रहे हैं। परन्तु यदि आप ये घण्टे दूसरों की आत्माओं पर खर्च करते हैं, अपनी समझदारी, अपना धीरज और अपना पूरा ध्यान उन्हें देते हैं, तो आप एक ऐसी विरासत बना रहे हैं, जो आपके इस पृथ्वी से चले जाने के बाद भी अनन्त लाभ देती रहेगी। आप "समय बिताने" वाले जीवन से हटकर "जिम्मेदारी सौंपने" और "समय का सही उपयोग करने" वाले जीवन की ओर बढ़ रहे हैं—और यह सुनिश्चित कर रहे हैं कि आपके अन्तिम अध्याय ही अब तक आपके द्वारा लिखे गए सबसे अधिक उत्पादक अध्याय हैं।

मुश्किल बातचीत: बाइबल-आधारित धन-सम्पत्ति की योजना बनाना और विरासत

एक कड़वी गोली है, जिसे निगलने से कई सेवानिवृत्त लोग आसानी से इन्कार कर देते हैं कि: अन्त के बारे में खुलकर और ईमानदारी से बात करना अत्यन्त महत्वपूर्ण है। हम अपनी गिरती हुई सेहत, अपने अन्तिम वित्त और जीवन-के-अन्त की अपनी इच्छाओं के बारे में बातचीत के साथ ऐसा बर्ताव करते हैं कि मानो यह कोई बुरी घटना या अपनी गरिमा का समर्पण करना हो। हम इन विषयों से इसलिए बचते हैं, क्योंकि ये हमारे घमण्ड पर सीधी चोट जैसे लगते हैं, और हमें यह मानने पर विवश करते हैं कि जिस सामर्थ्य से हमने दशकों तक व्यापार किया, वह आखिरकार कम होती जा रही है। हम बड़ी तत्परता से चाहते हैं कि अपने बड़े हो चुके बच्चों के सामने "मजबूत मनुष्य" होने का दिखावा बनाए रखें—जो एक ऐसे अजेय प्रदाता की छवि है, जिसे कभी सहायता की आवश्यकता नहीं पड़ती और जो कभी ऐसे संकट का सामना नहीं करता, जिसे वह सम्भाल न सके। परन्तु हमें यहाँ साफ-साफ कहना होगा कि: इन बातों से बचना न तो मजबूती का काम है और न ही अपने परिवार की सुरक्षा करने का कोई तरीका है। यह भण्डारीपन की एक बड़ी विफलता है। अपने अहंकार को बचाने के लिए चुप रहकर, आप पक्का उन लोगों के लिए बहुत बड़ी उलझन छोड़ जाएँगे, जिनसे आप सबसे अधिक प्रेम करते हैं, और उन्हें दु:ख एवं उलझन की दशा में असम्भव निर्णय लेने पर विवश करेंगे।

एक मसीही माता-पिता परिवार में झगड़ा उत्पन्न किए बिना सेहत, वित्त और जीवन-के-अन्त की इच्छाओं के बारे में मुश्किल बातचीत कैसे कर सकते हैं?

आपको इस बातचीत को किसी बीमार आवश्यकता के तौर पर नहीं, बल्कि अपने घराने की सेवा के एक अन्तिम और बलिदानी काम के तौर पर देखना चाहिए। आप अपने अन्तिम पल तक प्रभु की सम्पत्ति के प्रबन्धक हैं, और बाइबल के अनुसार धन-सम्पत्ति की योजना बनाने का अर्थ केवल इस बात से कहीं बढ़कर है कि घर या गहने का वारिस कौन होगा। यह "बाहर निकलने के भण्डारीपन" के बारे में है। यह एक ईमानदार और साहस भरी बातचीत है, जो ध्यान को आपका नियंत्रण समाप्त होने से हटाकर एक प्रबन्धक के तौर पर आपकी विश्वासयोग्यता पर ले जाती है। यह अपने बच्चों की आँखों में आँखें डालकर यह कहने का पल है कि, "मैं इन संसाधनों का प्रबन्धक हूँ, और मेरा अन्तिम काम यह सुनिश्चित करना है कि मेरे जाने के बहुत समय बाद भी ये प्रभु की सेवा करते रहें और इस परिवार को शान्ति दें।" आप समय के शिकार या शरीर की कमजोरी के मारे हुए व्यक्ति के तौर पर बात नहीं कर रहे हैं। आप एक ऐसे यात्री के तौर पर बात कर रहे हैं, जो तत्परतापूर्वक एक लम्बी यात्रा के अन्तिम पड़ाव की तैयारी यह सुनिश्चित करते हुए कर रहा है कि उसका सामान बँधा हुआ है और उसकी मंजिल साफ है।

जब आप अपनी "इच्छाओं" और चिकित्सकीय निर्देशों के बारे में बात करते हैं, तो आप कब्र से नियंत्रण बनाए रखने की माँग नहीं कर रहे होते; वरन् आप एक दया दिखा रहे होते हैं। आप अपने बच्चों को उस तोड़ देने वाले बोझ से स्वतंत्र कर रहे होते हैं, जो किसी बहुत बड़े संकट के समय यह अन्दाजा लगाने से आता है कि आप क्या चाहते। आप उस टकराव को दूर कर रहे होते हैं जो इस संसार की बेकार बातों को लेकर परिवार में झगड़ों और कानूनी लड़ाइयों के कारण बनता है। एक विश्वासयोग्य विरासत अपने पीछे उलझन के बजाय स्पष्टता और बिना उत्तर वाले प्रश्नों के ढेर के बजाय सुसमाचार की दृढ़ आशा छोड़ जाती है। अन्त के बारे में पारदर्शी रहकर, आप अपने जीवन की सबसे महत्वपूर्ण शिक्षा देने का काम कर रहे होते हैं। आप अपने बच्चों को सिखा रहे होते हैं कि—गरिमा के साथ, व्यवस्थित ढंग से, और मसीह की ओर ध्यान लगाकर

देखते हुए - अच्छी तरह से कैसे मरा जाए। यह शिक्षा उतनी ही महत्वपूर्ण है, जितनी कि उन्हें अच्छा जीवन जीने के बारे में सिखाई गई कोई भी दूसरी शिक्षा महत्वपूर्ण है, क्योंकि यह साबित करती है कि आपका विश्वास इतना मजबूत है कि वह बिना डगमगाए कब्र की सच्चाई का सामना कर सकता है। आप उन्हें दिखा रहे हैं कि भण्डारी के लिए, अन्त कोई छिपाए जाने वाली त्रासदी नहीं है, बल्कि यह सम्मान के साथ पूरा किया जाने वाला एक अन्तिम काम है। इस विषय पर और जानकारी के लिए, मार्गदर्शिका संख्या 64 को देखें।

5

दौड़ को अच्छे से पूरा करना

कालेब जैसी सोच: 85 वर्ष की आयु में पहाड़ी लेना

अक्सर हम जीवन के अन्तिम दशक को अपरिहार्य रूप से धीरे-धीरे पीछे हटने या प्रकाश के धीरे-धीरे कम होने जैसा मानते हैं, और स्वयं को भरोसा दिलाते हैं कि अब हमारे योगदान की कोई आवश्यकता नहीं है। यहाँ तक कि मसीही निवेश सलाहकार भी अक्सर सेवानिवृत्ति के आरम्भिक वर्षों को "जाओ-जाओ", दूसरे दशक को "धीरे-धीरे जाओ" और तीसरे दशक को "मत जाओ" कहकर परिभाषित करते हैं। हम इस सांस्कृतिक सोच को अपना लेते हैं कि भारी वजन उठाना, जोखिम उठाना और कठिन आत्मिक परिश्रम तो केवल जवानों के लिए है, जबकि हमारा काम तो बस सड़क के किनारे चुपचाप बैठकर इस संसार को ऐसे आते-जाते देखना है, जैसे कि यह वही चलचित्र हो, जिसे हम पहले ही देख चुके हैं। परन्तु बाइबल की कहानी की दृढ़ता कालेब के व्यक्तित्व में इस निष्क्रिय और खोखले दृष्टिकोण को तोड़ देती है। यहोशू 14 अध्याय में, हम एक 85 वर्ष के बूढ़े व्यक्ति को अपने अगुवे के सामने सीधे खड़े और अपनी आँखें ऊपर की ओर लगाए हुए पाते हैं, जो डूबते सूरज की ओर नहीं, बल्कि एक सक्रिय भविष्य की ओर देख रहा था। वह वहाँ पेंशन माँगने, किसी शान्त घाटी में आरामदेह भूमि का टुकड़ा माँगने, या अपनी पीड़ाओं को सहते हुए अन्त की प्रतीक्षा करने के लिए कोई शान्त जगह माँगने नहीं गया था। इसके बजाय, उसने एक पहाड़ी माँगी—एक ऊबड़-खाबड़, खतरनाक इलाका माँगा, जहाँ अनाकवंशी दानव रहते थे। उसने उन चुनौतियों को जिनसे जवान लोग भी डरते थे, देखकर कहा, "जितना बल मूसा के भेजने के दिन मुझ में था उतना बल अभी तक मुझ में है; युद्ध करने, या भीतर बाहर आने जाने के लिये जितनी उस समय मुझ में सामर्थ्य थी उतनी ही अब भी मुझ में सामर्थ्य है।"

जब यह संसार हमसे परछाई में ओझल हो जाने की अपेक्षा करता है, तो कालेब की कहानी की दृढ़ता हमें विश्वासयोग्य बने रहने के बारे में क्या सिखाती है?

यह हमें सिखाती है कि विश्वासयोग्यता का अर्थ किसी बेकार हो चुके औजार या उपयोग हो चुकी बैटरी की तरह "समाप्त हो जाने" की दशा नहीं है। यह वेदी पर पवित्र भेंट की तरह "उण्डेले जाने" की दशा है। कालेब को अपनी शारीरिक आयु के बारे में कोई गलतफहमी नहीं थी, और न ही वह अपने घमण्ड के निमित्त अपनी जवानी को वापस पाना चाहता था। उसे वह पहाड़ी इसलिए चाहिए थी, क्योंकि वह परमेश्वर के द्वारा प्रतिज्ञा की गई विशेष विरासत थी। वह जानता था कि जब तक उसके फेफड़ों में साँस है, उसके पास एक ऐसा आदेश है, जो अभी तक पूरा नहीं हुआ है। वह युद्ध में इसलिए बना रहा, क्योंकि वह एक ऐसी सच्चाई को समझता था, जिससे अधिकांश सेवानिवृत्त लोग चूक जाते हैं: एक भण्डारी केवल इसलिए अपने मिशन से सेवानिवृत्त नहीं होता, क्योंकि उसके बाल पक गए हैं या उसे वेतन मिलना बन्द हो गया है। आपको क्या आदेश मिला है?

दौड़ को अच्छे से पूरा करने का अर्थ असल में आत्मा की सांस्कृतिक "सेवानिवृत्ति" का इन्कार करना है। इसका अर्थ इस झूठ को ठुकराना है कि आपकी उपयोगिता आपकी आर्थिक उत्पादकता से जुड़ी हुई है। इसका अर्थ अपने समुदाय के बिखरने, अपने परिवार की गहरी आत्मिक आवश्यकताओं, और अपनी स्थानीय कलीसिया के भारी एवं ढाँचागत बोझ को देखना और यह कहने का पवित्र साहस रखना है कि "वह पहाड़ी मुझे दे।" हो सकता है कि आपकी सामर्थ्य अब आपकी शारीरिक मांसपेशियों या आपकी पेशेवर गति में न हो। परन्तु यह आपके अनुभव के परिष्कृत लोहे में, आपकी प्रार्थनाओं की दृढ़ और जबरदस्त सामर्थ्य में, और जब परिस्थितियाँ कठिन हो जाती हैं, उस समय में भी हार न मानने के स्पष्ट इन्कार में मिलती है। आप विश्वास के एक अनुभवी व्यक्ति हैं, और आपके घाव ही आपकी पहचान हैं। दौड़ तब समाप्त नहीं होती, जब आपको सोने की घड़ी मिलती है। और यह तब भी समाप्त नहीं होती, जब शरीर धीमा पड़ने लगता है। दौड़ तभी समाप्त होती है, जब आप आखिरकार स्वर्ग की डेवढ़ी पार करते हैं और अपने अन्तिम हिसाब-किताब के लिए प्रभु के सामने खड़े होते हैं। और उस पल तक, पहाड़ी अभी भी वहीं है, दानव अभी भी वहीं हैं, और राजा के लिए वह देश जीतने की बुलाहट उतनी ही महत्वपूर्ण है, जितनी कि वह उस पहले दिन थी, जब आप उसके पीछे हो लिए थे।

पुनरुत्थान की आशा: पेशे का अन्त बनाम जीवन का अन्त

इस संसार के स्त्री-पुरुषों के लिए, पेशे का अन्त एक त्रासदी इसलिए है, क्योंकि यह जीवन के अन्त का एक पूर्वाभ्यास है। यदि यह संसार ही सब कुछ है, तो हर पका बाल आने वाले शून्य की याद दिलाता है। परन्तु मसीही के लिए, पेशे की "समाप्ति रेखा" एक शानदार घर वापसी के रास्ते में केवल दृश्य का बदलना है। हम वेतन या अपने शारीरिक बल के समाप्त होने से इसलिए नहीं डरते, क्योंकि हम एक ऐसे राज्य के नागरिक हैं, जिसका आरम्भ अभी-अभी हुआ है।

नीति. 4:18 इस सच्चाई का शानदार वर्णन करता है। "धर्मियों की चाल उस चमकती हुई ज्योति के समान है, जिसका प्रकाश दोपहर तक अधिक अधिक बढ़ता रहता है।" थोड़ा रुकिए। क्या सेवानिवृत्ति के वर्षों में सूरज का प्रकाश कम नहीं होता? क्या सेवानिवृत्ति की तुलना शाम ढलने से नहीं की जाती? हाँ, यह संसार ऐसा ही करता है, परन्तु बाइबल ऐसा नहीं करती। पास्टर जॉन पाइपर ने कहा, "मसीही जीवन रात की ओर नहीं बढ़ रहा है; यह दोपहर की ओर बढ़ रहा है। इसमें सूर्यास्त के वर्ष नहीं होते। इसमें केवल ग्यारह बजे से दोपहर तक का समय होता है।" तो इसका अर्थ है कि सेवानिवृत्ति के वर्षों में हम वह "जाओ-जाओ" के छोर तक वाली दौड़ नहीं दौड़ते, क्योंकि वे अनिवार्य रूप से "धीरे-धीरे जाओ" और अन्त में "मत जाओ" में बदल जाएँगे। लोग अपना पूरा जीवन धन बचाने में लगा देते हैं, ताकि वे सेवानिवृत्ति के बाद वाली खुशहाल छुट्टियों का "सपना सच कर सकें"। आम लोगों के लिए यह एक तरह का नशा है।

परन्तु पुनरुत्थान की आशा बुढ़ापे को देखने के एक मसीही के तरीके को बदल देती है। यह सब कुछ इसलिए बदल देती है, क्योंकि यह हमें याद दिलाती है कि हमारे "डेरे" समेटे जा रहे हैं, ताकि "हमें परमेश्वर की ओर से स्वर्ग पर एक ऐसा भवन मिलेगा जो... चिरस्थाई है" और हम उसके वारिस हो सकते हैं (2 कुरि. 5:1)। हमें अपनी जवानी या अपनी पेशेवर प्रासंगिकता से जबरदस्ती चिपके रहने की आवश्यकता नहीं है, क्योंकि हम जानते हैं कि हमारा सबसे अच्छा संस्करण अभी आना बाकी है। पुनरुत्थान बुढ़ापे के "काँटों" का सबसे बड़ा उत्तर है। यह हमें बताता है कि हमारे जोड़ों में जो सड़ाहट हमें महसूस होती है, वह कुछ समय के लिए है, परन्तु जिस महिमा की ओर हम बढ़ रहे हैं, वह हमेशा बनी रहने वाली है। जब आपको एहसास होता है कि मृत्यु केवल प्रभु के घर का ओसारा ही है, तो आप अपने आखिरी वर्षों के साथ किसी अन्तिम

संस्कार की तरह बर्ताव करना बन्द कर देते हैं, और उनसे दोपहर की दावत की तैयारी की तरह बर्ताव करने लगते हैं। भण्डारी को उस दिन से डर नहीं लगता, जब मालिक उसे अन्तिम लेखा-जोखा लेने के लिए बुलाता है। वह उस दिन का प्रतीक्षा यह जानते हुए करता है कि मालिक की "शाबाशी" इस संसार की सभी सोने की घड़ियों से कहीं अधिक कीमती है।

मसीह में विश्राम करना: कमजोर होते शरीर के लिए बाइबल-आधारित शान्ति

यह संसार बुढ़ापे के डर का सामना उसे अनदेखा करके, उसे छिपाकर या उसे खरीदकर करता है। हम "बुढ़ापा रोकने वाले" बेकार के सामानों पर अरबों रुपये खर्च करते हैं, और यह दिखावा करने का प्रयास करते हैं कि इसमें चलने का रास्ता कठिन नहीं हो रहा है। परन्तु बाइबल एक अधिक मजबूत शान्ति देती है—जो मसीह में विश्राम करने की शान्ति है। बुढ़ापे और स्वतंत्रता खोने के डर का सामना एक विश्वासी बाइबल के तरीके से कैसे कर सकता है? इसका आरम्भ यह समझने से होता है कि आपकी स्वतंत्रता हमेशा से एक भ्रम थी। आप हमेशा से एक निर्भर प्राणी रहे हैं, जो परमेश्वर के द्वारा दी गई हर साँस के "सामान्य अनुग्रह" से जीवित रहे हैं।

बुढ़ापा असल में परमेश्वर के द्वारा हमारे स्वयं-पर-निर्भर-रहने के सहारे को हटाने की प्रक्रिया है, ताकि हम अपने नीचे की चट्टान को देख सकें। मसीह में विश्राम करने का अर्थ यह भरोसा रखना है कि जिसने आपकी जवानी वाली "सोमवार की सुबह" में आपको सम्भाला, वही आपके बुढ़ापे वाली "रविवार की शाम" में भी आपको सम्भालेगा। और इसका अर्थ यह समझना है कि असल में अभी तो दोपहर ही हुई है। यशा. 46:4 हमें प्रभु का वादा प्रदान करता है: "तुम्हारे बुढ़ापे में भी मैं वैसा ही बना रहूँगा और तुम्हारे बाल पकने के समय तक तुम्हें उठाए रहूँगा। मैं ने तुम्हें बनाया और तुम्हें लिए फिरता रहूँगा; मैं तुम्हें उठाए रहूँगा और छुड़ाता भी रहूँगा।"

समाप्त करने के लिए आपको बहुत मजबूत होने की आवश्यकता नहीं है; आपको बस इतना विश्वायोग्य रहना है कि आप सहारा ले सकें। दौड़ को अच्छे से पूरा करने का अर्थ समाप्ति रेखा तक तेजी से दौड़ना नहीं है। इसका अर्थ एक स्थिर और पक्का भरोसा है, जो शरीर के डगमगाने पर भी नहीं डगमगाएगा। इसका अर्थ हर दिन जागना और यह समझना है कि आपको नया काम सौंपा जाना एक उपहार है, आपकी समझदारी एक औजार है, और आपका प्रभु मार्ग के अन्त में आपकी प्रतीक्षा कर रहा है। यह दौड़ तो लम्बी है, और काँटे भी असली हैं, परन्तु नया नगर दिखाई दे रहा है।

निष्कर्ष: सबसे अच्छा आना तो अभी बाकी है

एक बार मैं समुद्र के किनारे बसे एक गाँव में गया था, और वहाँ एक पुल था, जिसे पूरा होने में लगभग एक दशक लग गया था। यह एक मजबूत, धूसर रंग का ढाँचा था, जिसे खारी हवा और अटलांटिक महासागर की जोरदार लहरों का सामना करने के लिए बनाया गया था। उस इलाके के लोग तो अधीर हो गए थे। कई वर्षों तक, वह क्षितिज पर एक कंकाल के अतिक्रमण से अधिक कुछ नहीं लगता था। परन्तु जिस दिन यह आखिरकार बनकर तैयार हुआ, तब मैं किनारे पर ही खड़ा हुआ था और सूरज डूबने वाला था। वह प्रकाश पुल के हिस्सों पर ऐसे कोण से पड़ा कि धूसर इस्पात में जैसे आग लग गई हो, और इसने उसे सोने का पुल बना दिया, जो चमकते हुए क्षितिज की ओर सीधे जा रहा था। जब अन्तिम बोल्ट कसा गया, तो मजदूर चले नहीं गए; वे थके हुए और धूल से सने हुए वहीं खड़े रहे, और अपने पूरे किए हुए काम पर प्रकाश को नाचते हुए देखते रहे।

आपका जीवन उसी पुल के जैसा है। बाजार में आपके बिताए चालीस वर्ष, परिवार के पालन-पोषण में गुजरे कई दशक, हज़ारों "सोमवार" जो केवल कड़ी मेहनत जैसे लगते थे—वे सब गाडुर और नींव के खम्भे थे। और अब, जब आपके पेशे का सूरज "डूबने" लगा है, तो प्रकाश आखिरकार उस ढाँचे पर इस तरह पड़ रहा है, जिससे उसका असली उद्देश्य साफ हो जाता है। सेवानिवृत्ति मृत्यु की प्रतीक्षा करने की जगह नहीं है; यह वह क्षण है, जब पुल आखिरकार अपनी असली मंशा का बोझ उठाने के लिए तैयार हो जाता है। यह स्वर्ग के लिए एक प्रशिक्षण का मैदान है, जहाँ परमेश्वर सूरज और चाँद की जगह ले लेता है।

हमें यह मान लेने की आदत डाली गई है कि खाली दिनदर्शिका बेकार हो जाने की निशानी है। हम मंगलवार की दोपहर की रिक्त जगहों को देखकर, अप्रासंगिक होने की ठण्डी हवा को महसूस करते हैं। परन्तु सुसमाचार एक अलग कहानी बताता है। वे खाली जगहें कोई शून्यता नहीं हैं। वे एक पवित्रस्थान हैं। वे उन बातों के लिए "नया काम सौंपा जाना" है, जो अब सबसे अधिक महत्व रखती हैं। परमेश्वर के राज्य में, आपको कभी भी "चरागाह से हटाए जाने" के लिए नहीं सोचा जाता। आपको आत्मा की पंक्तियों में सबसे आगे लाया जाता है। आप ऐसे प्राचीन हैं, जिसके पास बुद्धि है, आप दूसरों के लिए

प्रार्थना करने वाले ऐसे जन हैं, जो पंक्ति में डटे रहते हैं, और आप ऐसे भण्डारी हैं, जिसके पास आखिरकार किसी अन्तिम तिथि की चिन्ता किए बिना सीधे प्रभु की आँखों में देखने का समय है।

सबसे अच्छा आना तो अभी बाकी है, क्योंकि पुल बनाने वाला दूसरी तरफ खड़ा है। आपका काम समाप्त नहीं हुआ है; बस उसे और बेहतर बनाया गया है। पेशेवर घमण्ड की गंदगी जलकर समाप्त हो रही है, ताकि आपके चरित्र का सोना चमक सके। जो ढलती हुई शाम जैसा दिख रहा है, उससे डरें नहीं। विश्वासी के लिए, यह उस दोपहर का आरम्भ है जो कभी समाप्त नहीं होगी।

खाली दिनदर्शिका के लिए एक प्रार्थना

हे पवित्र और सर्वशक्तिमान पिता, हम तेरे पास ऐसे हाथों के साथ आए हैं, जो अजीब तरह से हल्के लग रहे हैं और ऐसे हृदयों के साथ आए हैं, जो भुला दिए जाने के डर से भारी लग रहे हैं। हम उन स्त्री-पुरुषों को प्रार्थना में तेरे सम्मुख उठाते हैं, जो आज खाली दिनदर्शिका को देखकर हैरान हो रहे हैं कि क्या उनकी आवाज में अब भी कोई वजन है, या क्या तेरी अर्थव्यवस्था में उनके जीवन का कोई उद्देश्य है।

हे प्रभु, हमें क्षमा कर कि हमने अपनी कीमत को अपने काम से और अपनी पहचान को अपने वेतन से जोड़ा है। हम अंगीकार करते हैं कि हमने अक्सर अपने हाथों के काम की उपासना उस परमेश्वर से अधिक की है, जिसने हमें परिश्रम करने का बल दिया है। हमें यह याद रखने में सहायता कर कि तूने मसीह में हमारे लिए हर अच्छे काम की तैयारी की है—वह काम जो हम सेवानिवृत्ति से पहले भी करते थे और उसके बाद भी करते हैं। अप्रासंगिक होने की उस मूर्ति को तोड़ दे, जो हमारी शान्त दोपहरों को भयभीत करती है। हमें याद दिला कि तेरी दृष्टि में हम बिलकुल भी "पुराने" नहीं हैं, बल्कि हम अभी और हमेशा के लिए तेरी सन्तान, तेरे भण्डारी और तेरे राजदूत हैं।

हमें कालेब जैसा साहस और दृढ़ता दे कि हम उन पहाड़ियों को देख सकें, जिन्हें अभी जीतना बाकी है। हमें मार्था जैसा हृदय दे कि जब हमारे पाँव हमें सहारा न दे सकें, तब भी हम अपने घुटनों के बल झुककर सेवा कर पाएँ। हमारे घरों की खामोशी को तेरी उपस्थिति के संगीत से भर दे। हम समय की इस नयी मुद्रा का उपयोग जवानों की आत्माओं में निवेश करने, टूटे हुए हृदयों को जोड़ने, और अपने हृदयों को उस नये नगर के लिए तैयार करने हेतु करें।

जब परछाइयाँ लम्बी हो जाएँ और हमारा बल कम होने लगे, तो हमें उस शानदार वादे का सहारा दे कि तू ही वह परमेश्वर है, जो हमें हमारे बालों के पकने तक भी सम्भाले रखता है। हम इस दौड़ को बोरियत से रिरियाने के साथ नहीं, बल्कि तेरी "शाबाश" कहने वाली आवाज की गूँज के साथ पूरा करें।

आमीन।

THE
MENTORING
PROJECT

डॉ. रिचर्ड जॉन परहाई, कीव थियोलॉजिकल सेमिनरी में सन् 2003 से बाइबल और थियोलॉजी के प्रोफेसर (आचार्य) रहते हुए, वाइस प्रेसिडेंट (उपाध्यक्ष) और एकेडमिक डीन (शैक्षणिक अध्यक्ष) के तौर पर काम करते हैं। उन्होंने बैपटिस्ट बाइबल सेमिनरी से सिस्टमैटिक थियोलॉजी में पी.एच.डी. (मैग्ना कम लॉड) और डालस थियोलॉजिकल सेमिनरी से बाइबल की व्याख्या में मास्टर्स इन थियोलॉजी की डिग्री हासिल की है। वे "एंटीओसीन थियोरिया इन द राइटिंग्स ऑफ थियोडोर ऑफ मोपसुएस्टिया एण्ड थियोडोरेट ऑफ सायरस" (Antiochene Theōria in the Writings of Theodore of Mopsuestia and Theodoret of Cyrus) (फोर्ट्रेस प्रेस, 2015) पुस्तक के लेखक भी हैं।

डॉ. लैरी ओट्स, मारनाथा बैपटिस्ट सेमिनरी में लम्बे समय से बाइबल के प्रोफेसर (आचार्य) और पूर्व में सन् 2009-2019 तक अध्यक्ष रहे हैं। उन्होंने वाटरटाउन, विस्कॉन्सिन में मारनाथा बैपटिस्ट यूनिवर्सिटी में 40 से अधिक वर्षों तक सेवा की है। मारनाथा बैपटिस्ट यूनिवर्सिटी से ही स्नातक होने के बाद, उन्होंने सिस्टमैटिक थियोलॉजी में पी.एच.डी. की है और वे मौलिकतावाद और बैपटिस्ट इतिहास के विशेषज्ञ हैं।